Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक06.10.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

जो ख़ुदा तआला में होकर मुजाहिदः (संघर्ष) करता है उस पर अल्लाह तआला अपनी राहें खोल देता है जो प्रयास करते हैं, इस चिन्ता में रहते हैं कि ख़ुदा तआला के सही दीन की तलाश करें, उसे पाने की कोशिश करें, वे फिर हिदायत भी पाते हैं, ईमान में भी बढ़ते हैं और अधिक प्रगति भी करते चले जाते हैं

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

समय समय पर लोगों के अहमदियत क़बूल करने के ईमान वर्धक वृत्तांत बयान करता रहता हूँ। अनेक लोग मुझे लिखते हैं कि इस प्रकार की घटनाएँ सुनाते रहा करें क्यूँकि ये घटनाएँ रूचिकर होने के कारण हमारे बच्चों का भी ध्यानाकर्षित करती हैं। युवाओं की दीनी और रूहानी हालत में प्रगति का कारण बनती हैं। स्वयं हमारी हालतों में उन्नति का कारण बनती हैं। कुछ पैदायशी अहमदी लिखते हैं कि नए आने वालों की यह ईमानी हालत जो है तथा अल्लाह तआला से उनका सम्बंध हमें लज्जित कर रहा होता है और ध्यान दिला रहा होता है कि हम भी ईमान में बढ़ने का प्रयास करें। इसी प्रकार कुछ नौमुबाओन भी इस बात को व्यक्त करते हैं कि इन बातों से हमारे ईमान में वृद्धि होती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- وَالَّذِیۡنَ جَاہَدُوۡا فِیۡنَا لَنَہۡدِیَنَّہُمۡ سُبُلَنَا

जो ख़ुदा तआला में होकर संघर्ष करता है उस पर अल्लाह तआला अपनी राहें खोल देता है जो प्रयास करते हैं, इस चिन्ता में रहते हैं कि ख़ुदा तआला के सही दीन की तलाश करें, उसे पाने की कोशिश करें, वे फिर हिदायत भी पाते हैं, ईमान में भी बढ़ते हैं और अधिक प्रगति भी करते चले जाते हैं। कुछ लोगों पर अल्लाह तआला उनकी कुछ नेकियों के कारण कृपा करता है तथा उनको सत्मार्ग दिखाता है। इस प्रकार जो घटनाएँ हम बयान करते हैं वे ऐसे लोगों की ही ईमान वर्धक घटनाएँ हैं जो इस प्रयास में होते हैं कि किसी प्रकार हमें सही रास्ता मिले जिन पर विशेष रूप से अल्लाह तआला का फ़ज़्ल होता है, उनकी नेकी के कारण।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अहमदियत क़बूल करने की ईमान वर्धक घटनाएँ बयान करते हुए फ़रमाया- फ्रांस की एक महिला आसिया साहिबा कहती हैं कि एक दिन इन्टर नैट पर प्रतिदिन की भांति कुछ नए चैनल्ज़ की तलाश में थी कि मुझे हवारिल मुबाशिर का लिंक मिल गया जहाँ मसीह अलै. के निधन का विषय चल रहा था और जिसमें हर प्रकार के सन्देह से ख़ाली तथा विश्वास से परिपूर्ण, सभ्य तरीक़े तथा शक्ति शाली और विश्वस्त तर्कों को सुनकर मैं चकित रह गई। कहती हैं- इससे कुछ दिन पूर्व मैंने सपना देखा था कि मैं एक अन्धे कुएँ में गिरने वाली हूँ तथा मैंने कुएँ की मुंडेर को दोनों हाथों से थामा हुआ है तथा टांगें नीचे लटक रही हैं। सहसा मैंने ऊपर देखा तो मुझे तीन चार सफ़ेद पक्षी दिखाई दिए जिनका रंग अत्यधिक उज्जवल था परन्तु मुझे पता नहीं कि वे कौन हैं, वे पक्षी मुझे बचाने के प्रयास में थे। कहती हैं- आरम्भ में तो मुझे इस सपने की बात समझ नहीं आई लेकिन बाद में पता चला कि ये तो हवार के पैनल के सदस्य हैं जो पक्षियों के रूप में दिखाए गए। मैंने जमाअत की किताबें विशेषतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का अध्ययन करने का निर्णय किया जिनमें मुझे कोई बात इस्लाम विरोधी नज़र नहीं आई बल्कि इसकी अपेक्षा मैंने आपके पवित्र अस्तित्व में इस्लाम और मुसलमानों और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पूरी शक्ति के साथ बचाव करने वाला महान व्यक्तित्व नज़र आया जो इन पुस्तकों के द्वारा इस्लाम के दुश्मनों पर इस्लाम का रोअब क़ायम फ़रमाता है। कहती हैं- फिर

मैंने इस्तिख़ारा किया और बैअत कर ली।

एक महिला हैं तुर्की में मीरा साहिबा, वे कहती हैं मैं अपनी बैअत का विवरण बयान करना चाहती हूँ। 2010 में जमाअत से परिचय हुआ, शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने देखा कि मेरे पति एम टी ए अल-अर्बीय्यः बड़े चाव से देखते थे, अतः मैं भी देखने लगी तथा कई बार उनकी अनुपस्थिति में भी एम टी ए देखती रहती थी। फिर मैंने दज्जाल के बारे में जमाअत द्वारा तय्यार की हुई फ़िल्म देखी तथा तफ़सीर बड़ी तर्क पूर्ण और उपयुक्त लगी जो पहले कभी न सुनी थी। फिर और अधिक एम टी ए देखने लगी तथा हवार के प्रोग्राम देखे और तहज्जुद निरन्तर पढ़ने लगी। इसके बाद अब्दुल क़ादिर औदे साहब ने दौरा किया तो मैंने बैअत कर ली। फिर मेरी बहू और बेटियों ने भी बैअत कर ली। हम जमाअत के विषयों पर चर्चा करते तथा कहते कि यही वास्तविक इस्लाम है। कहती हैं कि जिस दिन मैंने बैअत की, मैंने सपने में देखा कि सूरः कहफ़ की आयतें पढ़ रही हूँ इस पर मुझे विश्वास हो गया कि ख़ुदा तआला हमें दज्जाल के शर से बचाएगा और मैं इमाम मेहदी के सहयोगियों तथा सहायकों में से बनूँगी। ख़ुदा का शुक्र है कि उसने ईमान प्रदान किया, अल्लाह करे कि मैं इस दायित्व को निभाने वाली हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नई जमाअतों की स्थापना के कुछ वृत्तांत होते हैं कि किस प्रकार क़ायम करता है अल्लाह तआला जमाअतें। अब्दुल क़ुद्दूस साहब मुबल्लिग़ बैनिन लिखते हैं कि मुअल्लिम ज़िक्रिय्या एक गावँ में तबलीग़ के लिए गए। वहाँ एक दोस्त ने कहा कि इस समय लोग काम काज के लिए गाँव से बाहर हैं। आप जुम्अः के दिन आएँ तो लोग यहाँ मौजूद होंगे। अतः जब मुअल्लिम साहब जुम्अः के दिन दोबारा गए तो मुअल्लिम साहब ने मस्जिद में दाख़िल होने के बाद दो नफ़्ल अदा किए तथा इमाम साहब और इस गाँव की कमैटी की अनुमति से तबलीग़ शुरु की। मुअल्लिम ने सूरः फ़ातिहः की तफ़सीर और इमाम मेहदी के आगमन के विषय में तक़रीर की और लोग तक़रीर के बीच में अल्लाहु अकबर के नारे बुलन्द करते रहे। जब तबलीग़ समाप्त हुई तो उस मस्जिद की कमैटी के सदर साहब कहने लगे कि मैं मुसलमान पैदा हुआ हूँ लेकिन आज तक मैंने सूरः फ़ातिहः की इस प्रकार की तफ़सीर नहीं सुनी यदि अहमदिया जमाअत की यही शिक्षा है तो फिर मैं सबको मुबारकबाद देता हूँ, हम इस जमाअत को क़बूल करते हैं। इस प्रकार इमाम सहित उस गाँव की मुस्लिम तंज़ीम के सभी लोगों ने अहमदिया जमाअत को क़बूल कर लिया तथा इस प्रकार एक नई जमाअत की स्थापना हो गई।

नई जमाअतों के क़याम के बारे में ही एक अन्य घटना जो अरूशा रीजन की है। मुरब्बी साहब लिखते हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से एक नए स्थान पर अहमदियत की स्थापना हुई। सामे ज़िला के एक गाँव कसवानी में कोई अहमदी नहीं था, यहाँ बार बार दौरे करने की तौफ़ीक़ मिली, भारी संख्या में पम्फ़लैट बाँटे गए इसी प्रकार जमाअत के अख़बार और पुस्तकें भी इस गाँव में बाँटे गए जिसके परिणाम स्वररूप अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से न केवल बैअतें होना शुरु हो गईं बल्कि यथावत जमाअत की स्थाना हो चुकी है और ख़ुदा तआला की कृपा से यहाँ मस्जिद के लिए एक प्लाट ख़रीदा जा रहा है तथा जमाअत के स्थानीय लोग मस्जिद के लिए स्वयं ईंटें तय्यार कर रहे हैं लेकिन इसके साथ साथ दूसरे मुसलमानों की ओर से विरोध भी आरम्भ हो गया है। विरोधी पक्ष जमाअत के विरुद्ध भेदभाव उत्पन्न करने तथा उपद्रव करने लगे हैं। कहते हैं- हमने प्रबन्धकों से आज्ञा लेकर गाँव में मुनाज़रे (वाद-विवाद) की व्यवस्था की। पूरे गाँव में घोषणा कराई तथा सुन्नी मौलवी साहिबान को निमंत्रण दिया कि यदि वे समझते हैं कि वे सच्चे हैं तो आएँ और सबके सामने बात कर लें। अतः निश्चित प्रोग्राम के अनुसार मुनाज़रा आयोजित हुआ तथा बड़ी संख्या में ग़ैर अहमदी लोग इसमें शामिल हुए लेकिन सुन्नी मौलवियों में से कोई भी हाज़िर न हुआ। इस प्रकार गाँव के लोगों को पता चल गया कि मौलवियों के पास उपद्रव फैलाने के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

बर्कीना फ़ासो के अमीर साहब लिखते हैं कि एक गाँव नाबीर में तबलीग़ की गई, वहाँ अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से काफ़ी बैअतें हुईं। वहाँ एक कच्ची मस्जिद में एक मुअल्लिम साहब को नियुक्त किया गया। नियमानुसार जुम्अः की नमाज़ से शुभारम्भ किया गया लेकिन ग़ैर अहमदी मौलवी ने उपद्रव शुरु कर दिया तथा ठीक जुम्अः की नमाज़ के समय मस्जिद में आकर लोगों को भड़काया ताकि अहमदियत से दूर करने का प्रयास करे लेकिन जमाअत में निरन्तर वृद्धि होती

रही, अन्ततः मौलवी से कुछ न हो सका तो उसने अहमदिया जमाअत की मस्जिद के सामने अपनी एक मस्जिद बनाई और घोषणा कर दी कि अहमदिया मस्जिद अब केवल चटाईयाँ रखने वाला स्टोर बन जाएगी तथा वहाँ कोई नमाज़ी नहीं आएगा परन्तु हुआ इसके उलट। उसके घर के रिश्तेदार ही मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हैं और हमारी मस्जिद में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से नमाज़ियों में वृद्धि शुरु हो गई और ये लिखते हैं कि जुम्अः की नमाज़ के लिए छोटी से स्थान पर उपस्थिति दो सौ से ढाई सौ तक होती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने एक और ईमान वर्धक घटना बयान करते हुए फ़रमाया- दुआएँ क़बूल करने के दृश्य अल्लाह तआला किस प्रकार दिखाता है। अन्सर साहब मुबल्लिग़-ए-सिलसिला बैनिन लिखते हैं कि एक गाँव आसियू में दो सौ बैअतें हुई थीं अब उस गाँव में प्रत्येक मंगल और जुम्अः को तर्बियती क्लास होती है वहाँ कि सदर साहब की बेटी जो किसी दूसरे गाँव में रहती थी बड़ी बीमार हो गई तथा बीमारी के कारण शरीर पूर्ण रूप से निष्क्रय हो गया। लड़की ने बोलना और हरकत करना बन्द कर दिया था। उस लड़की को हस्पताल भी लेकर गए थे लेकिन किसी उपचार से कोई लाभ नहीं हो रहा था फिर निराश होकर उसको घर वापस ले आए और एक मौलवी को बुलाया जिसने लड़की पर दम किया और उसके बदले उसने चालीस हज़ार फ्रांक और एक बकरा लिया, लेकिन लड़की को आराम न आया। फिर एक अन्य मौलवी को बुलाया गया उसने भी इतनी बड़ी रक़म ली लेकिन रोग में कोई अन्तर नहीं आया। मौलवियों से हम निराश हो गए थे हमने सोचा कि इसने मर जाना है फिर लड़की को उसके बाप के घर छोड़ आए। इस प्रकार जब लड़की को यहाँ लेकर आए तो लड़की के पिता ने जमाअत को दुआ के लिए कहा और मुझे भी पत्र लिखा, कहते हैं कि एक दिन के बाद ही उस लड़की ने हरकत करनी शुरु कर दी तथा अगले दिन शाम तक बीमारी पूर्णतः उसके शरीर से निकल गई और कोई व्यक्ति यह नहीं सोचता था कि यह लड़की जीवित रहेगी परन्तु अब उसे देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि यह लड़की बीमार भी हुई थी तो यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का प्रमाण है।

हिन्दुस्तान, वहाँ के नायब नाज़िर दावत इलल्लाह इस समय लिखते हैं कि लखीमपुर नगर में एक दोस्त अब्दुस्सत्तार साहब के साथ पुनः सम्पर्क हुआ। जब उनके साथ मुलाक़ात हुई तो वे फूट फूट कर रोने लगे। उन्होंने बताया कि हम लोग करणपुर गाँव के रहने वाले थे, हमारी पचास बीघा ज़मीन थी, अच्छा कारोबार था। हम लोग बारह साल पहले बैअत करके जमाअत में शामिल हुए थे लेकिन बैअत के बाद हमारा इतना विरोध हुआ कि विरोधियों ने हमारे घर पर पथराओ किया और हमारे घरों से निकाल दिया हमें। मेरे बेटे को मार मार कर ज़ख़मी कर दिया, मेरी बीवी का हाथ तोड़ दिया। इतना विरोध हुआ कि हमें मकान और ज़मीन औने पौने दाम पर बेच कर वहाँ से निकलना पड़ा। सारा कारोबार नष्ट हो गया, हम वहाँ से लखीमपुर शहर में आए और एक छोटे से मकान में रहने लगे लेकिन वहाँ भी हमारे विरोधियों ने हमारा पीछा नहीं छोड़ा, वे यहाँ भी पहुंच गए तथा शहर के मुसलमानों को घृणित कर दिया। पूरे शहर में कोई एक मुसमान भी हम से बात न करता था, आते जाते हमें तंग किया जाता। इसी बीच जमाअत से हमारा सम्पर्क भी टूट गया लेकिन अल्लाह तआला ने हमें अहमदिया जमाअत की सच्चाई का एक महान निशान दिखाया कि हमारे विरोध में अग्रणीय विरोधी जो एक बस में सवार होकर एक शादी में जा रहे थे कि उनकी बस रेलवे फाटक पर फंस गई और ट्रेन से टकरा गई जिसके परिणाम स्वरूप अटठाईस लोग घटना स्थन पर ही मारे गए तथा बचने वाले भी बुरी तरह ज़ख़मी हो गए। लाशों का इतना बुरा हाल था कि पहचानी ही नहीं जाती थीं। दूर दूर तक शरीरों के अंग फैले हुए थे। विरोधियों के एक एक घर से नौ नौ लाशें निकलीं। जब हमें इस घटना का पता चला तो हम ज़ख़मियों से मिलने हस्पताल गए, उस समय विरोधियों के रिश्तेदार शरम के कारण हमसे मुंह छिपाने लगे। इस दुर्घटना के पश्चात लखीमपुर शहर की बड़ी मस्जिद के एक मौलवी ने उन विरोधियों को जो बच गए थे और कहते हैं- अब्दुस्सत्तार साहब के परिवार को मस्जिद में बुलाया। मौलवी साहब ने विरोधियों से कहा कि आप लोग इन अहमदियों से माफ़ी मांगें और इनका विरोध छोड़ दें, आप लोगों ने जो इनसे सम्बंध तोड़ा हुआ है उसे भी समाप्त कर दें। इस प्रकार इस घटना के बाद विरोध ठंडा पड़ गया। और कहते हैं- हमारा जमाअत से सम्पर्क टूटा हुआ था परन्तु हम दिल से अहमदी ही थे अतः इस सम्पर्क के जुड़ने से प्रसन्न हुए और बैअत को पुनः नया किया इन सबने। तो अल्लाह तआला उन लोगों की जो एक बार अहमदी होते हैं तथा वास्तविकता को समझकर अहमदी होते हैं, उनके फिर

ईमानों में भी मज़बूती प्रदान करता है।

नौ-मुबाअीन पर अत्याचार और फिर ईमान पर क़ायम रहने का उदाहरण एक तो मैंने पहले बयान की इन्डिया की, यू.पी. के एक गाँव की, वहाँ सारे गाँव ने बैअत की थी लेकिन बाद में भारी विरोध के कारण पूरा गाँव पीछे हट गया था लेकिन एक दोस्त मुहम्मद हनीफ़ साहब अहमदियत पर क़ायम रहे। विरोधियों ने उनका बड़ा विरोध किया परन्तु उन्होंने अपने ईमान को बचाए रखा। इसी विरोध के चलते हनीफ़ साहब के बेटे का निधन हो गया। विरोधियों ने उनके बेटे को क़ब्रिस्तान में दफ़नाए जाने तथा जनाज़ा पढ़ने से मना कर दिया और उससे कहा कि यदि तुम अहमदियत से तौबा करोगे तो तभी हम तुम्हारे बेटे का जनाज़ा पढ़ेंगे और क़ब्रिस्तान में दफ़नाने की अनुमति देंगे। परन्तु हनीफ़ साहब मज़बूती के साथ क़ायम रहे और अपने को साथ लेकर, जनाज़ा पढ़कर अपने बेटे को अपने ही मकान में दफ़न कर दिया। इस प्रकार जब उनका जमाअत के साथ पुनः सम्पर्क बना तो मिलकर रोने लगे तथा परिवार सहित बैअत को दोहराया। जब उनसे पूछा गया कि आपने केन्द्र से सम्पर्क क्यूँ नहीं किया तो कहने लगे कि लोगों ने हमें बताया था कि क़ादियानियों का केन्द्र तो लखनऊ में था, वह तो अब उजड़ गया है, उनका मदर्सा भी बन्द हो गया है, कोई नहीं रहा और क़ादियान का पता हमारे पास था नहीं, लेकिन इसके बावजूद जो ईमान में मज़बूती थी वे क़ायम रहे। उनको अल्लाह तआला ने हिदायत देनी थी, हिदायत पर क़ायम रखा। जो किसी विशेष लक्ष्य को लेकर अहमदी हुए थे, बैअतें की थीं वे सारे फिर गए और जमाअत छोड़ दी।

बैअत के बाद विशेष बदलाव भी लोगों में आता है। अज़बिक्स्तान के एक नौ-मुबाए दोस्त ज़हीर वाहिद साहब बयान करते हैं कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सूरः फ़ातिहः की तफ़सीर जानने के बाद मेरा तो नमाज़ पढ़ने तरीक़ा ही बदल गया। अब मुझे नमाज़ में वह कुछ मिलता है जो पहले कभी नहीं मिलता था। विशेषतः मुझे उस हदीस की व्याख्या ने बड़ा लाभ प्रदान किया है जो पहले मुझे समझ नहीं आती थी, जिसमें एहसान का भावार्थ बता गया है।

बोलविया के मुबल्लिग़ ग़ालिब साहब लिखते हैं कि विलयम शाहीन जो यूहूवह विटनैस समुदाय के एक पादरी थे, इनका सम्बंध लैबनान से है तथा जन्म से ईसाई थे, पिछले तीन साल से बोलविया में रहते थे। इस विनीत से ईसाइयत के इस सम्प्रदाय के विषय में छान बीन करने के लिए उनके साथ बैठक की। जब हमारी पहली मीटिंग हुई तो उन्होंने अपने सम्प्रदाय के विषय में बताने के बजाए मुझसे इस्लाम अहमदियत के बारे में प्रश्न करने आरम्भ कर दिए। इस प्रकार इस मीटिंग में आस्थाएं पेश की गईं, विशेष रूप से हज़रत ईसा अलै. का वर्णन हुआ। कहते हैं- मैंने उन्हें जुम्अः में शामिल होने का निमन्त्रण दिया तो वे जुम्अः की नमाज़ के समय निरन्तर आना शुरु हो गए और हर बार जुम्अः के बाद उनसे विस्तार पूर्वक बात चीत होती रही। विलयम साहब को चिन्ता थी कि यदि वे जमाअत में शामिल हुए तो उनके माता-पिता और चर्च वाले भी विरोध करेंगे और इस प्रकार उन्हें नई नौकरी ढूंडनी पड़ेगी। परन्तु दूसरी ओर सत्य की खोज को भी महत्त्व देते थे। ये श्रीमान जी अरबी समझ सकते थे, अतः उन्होंने जमाअत की वैब साईट के द्वारा अरबी पुस्तकों का अध्ययन शुरु कर दिया। इस अध्ययन के बाद कहने लगे कि वे बड़े समय से हक़ की तलाश में थे और अब उन्हें हक़ मिल गया है। अतः विरोध और व्यवसाय की चिंता किए बिना अल्लाह तआला की कृपा से एक दिन जुम्अः के बाद बैअत करके जमाअत में शामिल हो गए।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अहमदियत क़बूल करने के ईमान वर्धक वृत्तांत बयान फ़रमाए तथा अन्त में फ़रमाया- अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम यह सन्देश पहुंचाएँ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से अल्लाह तआला ने दुनिया में पहुंचाने के लिए हमें कहा है, इसको पहुंचाने वाले बन सकें।

TOLL FREE NO: 180030102131